Bodhi-Path Year 2022 January Issue Volume 22 Page No 1-2

सम्पादिका

डॉ संघमित्रा बौद्ध

मानव जीवन एवं प्रकृति में अन्यतम एवं अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। प्राचीन काल से ही विभिन्न सभ्याताओं का विकास प्रकृति की गोद में नदी की उपत्याकाओं में होता रहा है। भारतवर्ष में प्रकृति के महत्व व उसकी उपयोगिता के प्रति समाज सचेष्ट रहा है। वास्तव में प्राचीन भारतीय संस्कृति में बुद्ध धर्म प्रारंभ से अंत तक वृक्षों, जंगलों, मानव एवं पशुधन के कल्याण का पक्षधर रहा है। भगवान् बुद्ध के जन्म से परिनिर्वाण काल तक उनकी गतिविधियाँ को देखते हुए उन्हें पर्यावरण की रक्षा का प्रथम पथ प्रदर्शक तथा उपदेशक कहा जाय, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भगवान् बुद्ध के समान प्रकृति प्रेमी, पर्यावरण रक्षक विरले ही हुए है। बुद्ध का जन्म, तपस्या, ज्ञान–प्राप्ति, प्रथम उपदेश, महापरिनिर्वाण आदि अधिकांश घटनाएं प्रकृति की गोद में घटित हुई। अतः प्रकृति के रूप से यह सिद्ध होता हे कि बुद्ध पर्यावरण रक्षण के महान् समर्थक व प्रणेता थे।

भगवान् बुद्ध रूक्खमूल के नीचे ध्यान करने का उपदेश अपने शिष्यों को भी देते थे। ''यह सामने वृक्षों की छाया है... ध्यान करो, प्रमाद मत करो'' तथा वन की शोभा ध्यानी भिक्षु से ही है, ऐसा भाव उन्होंने मज्झिम–निकाय के महागोसिङ्ग–सुत्त में प्रकट किया है। जिस–जिस वनों, वन–खण्डों, पर्वत–प्रदेशों, नदियों और पुष्करिणियों आदि के किनारे बुद्ध ने समय–समय पर निवास किया, उनकी सूची बनाई जाऐ तो विदित होगा कि भगवान् बुद्ध का प्रायः सम्पूर्ण जीवन प्रकृति की छत्र–छाया में व्यतीत हुआ।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण प्रदूषण कि जिन समस्याओं से जूझ रहा है उसका एकमात्र सरल और सीधा उपाय भगवान् बुद्ध के चिंतन में उपल्बध है। बुद्ध एक कुशल मनोचिकित्स्क होने के साथ–साथ महान् पर्यावरणविद भी थे। वो भली–भांति जानते थे की बाह्य पर्यावरण और हमारे मन के प्रर्यावरण में घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि हमारा मन शुद्ध होगा तो उससे हमारा शरीर, घर, आस–पड़ोस और धीरे–धीरे समस्त विश्व शुद्ध हो जाएगा। शुद्ध

मन के प्रभाव से वायु, जल, ध्वनि इत्यादि के स्तर पर शुरू होने वाले प्रदूषणों से ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवता को हानि पहुँचाने वाली संस्कृति, सामाजिक, धार्मिक कट्टरवादित और निज स्वार्थ जैसे प्रदूषणों से भी मुक्ति मिल जाएगी। ऐसे शुद्ध वातावरण से मूर्ति विसर्जन के नाम पर न ही किसी की धार्मिक भावना आहात होगी ओर न ही गंगा निर्मलीकरण तथा स्वच्छ भारत मिशन जैसी योजनाओं पर देश की बौद्धिक संपदा का अपव्यय होगा।